NAND KISHORE VIDYA BHAVAN, DHANUHA, NAINI

Circular No. NKVB/EXAM/2023/01 **Date: September 27, 2023**

Dear Parents/Guardians/Students,

We have completed six successful months of the academic year 2023 – 2024. We may wonder how quickly six months passed without any notice. It's time to assess our performance as Parents, Teachers and Students. All of us have performed our roles as per our ability. As parents you have provided everything to your child that is, love, care, books, school fee, above all quality time for their growth as a beautiful child, well cultured future citizens of our wonderful nation. As Teachers, we have nurtured them lovingly, taking into account their cultural background. We are sure that we have not failed to impart subtle knowledge to your child. As Students, you have respected your Parents and Teachers. You have been regular to complete the class work and home work. You have imbibed the values and working hard to gain more knowledge for your all-round growth. Now it is time for all of us to gear up for the semi finals.

No one said it's going to be easy. There will be times when you'll feel like giving up. Don't give up. History is filled with famous people who failed before they achieved their goals. At times, they too struggled with a chronic lack of motivation and self-doubt and felt they would never realize their goals and dreams. But they stuck at it, and we can all thank them for making our world a better place.

Today, I am reminded of a short story '**The Elephant Rope**'. As a man was passing the elephants, he suddenly stopped, confused by the fact that these huge creatures were being held by only a small rope tied to their front leg. No chains, no cages. It was obvious that the elephants could, at anytime, break away from their bonds but for some reason, they did not.

He saw a trainer nearby and asked why these animals just stood there and made no attempt to get away. "Well," trainer said, "when they are very young and much smaller we use the same size rope to tie them and, at that age, it's enough to hold them. As they grow up, they are conditioned to believe they cannot break away. They believe the rope can still hold them, so they never try to break free."

The man was amazed. These animals could at any time break free from their bonds but because they believed they couldn't, they were stuck right where they were.

Like the elephants, how many of us go through life hanging on to a belief that we cannot do something, simply because we failed at it once before?

Failure is a part of learning; we should never give up the struggle in life.

I would like to conclude in a sentence – 'If you study hard and more effectively, you will **MAKE A DIFFERENCE** in the world around you'.

प्रिय माता-पिता/अभिभावक/छात्र,

हमने शैक्षणिक वर्ष 2023-2024 के छह सफल महीने पूरे कर लिए हैं। हमें आश्चर्य हो सकता है कि बिना किसी सूचना के छह महीने इतनी जल्दी कैसे बीत गए। यह माता-पिता, शिक्षक और छात्र के रूप में हमारे प्रदर्शन का आकलन करने का समय है। हम सभी ने अपनी क्षमता के अनुसार अपनी भूमिकाएँ निभाई हैं। माता-पिता के रूप में आपने अपने बच्चे को सब कुछ प्रदान किया है, प्यार, देखभाल, किताबें, स्कूल की फीस, सबसे बढ़कर गुणवत्तापूर्ण समय; वह सब कुछ जो हमारे राष्ट्र के भावी नागरिक को सुसंस्कृत बनाने के साथ-साथ उसके विकास के लिए आवश्यक है।

शिक्षक के रूप में, हमने उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए प्यार से उनका ख्याल रखा है। हमें यकीन है कि हम आपके बच्चे को सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करने में असफल नहीं हुए हैं।

छात्र के रूप में, आपने अपने माता-पिता और शिक्षकों का सम्मान किया है। आप कक्षा कार्य और गृह कार्य नियमित रूप से पूरा करते रहे हैं। आपने मूल्यों को आत्मसात कर लिया है और अपने सर्वांगीण विकास के लिए अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे है।

अब हम सभी के लिए सेमीफाइनल के लिए कमर कसने का समय आ गया है।किसी ने नहीं कहा कि यह आसान होगा। ऐसे समय आएंगे जब आपको हार मानने का मन करेगा। हिम्मत मत हारो। इतिहास ऐसे प्रसिद्ध लोगों से भरा पड़ा है जो अपने लक्ष्य हासिल करने से पहले ही असफल हो गए। कभी-कभी, वे भी प्रेरणा की पुरानी कमी और आत्म-संदेह से जूझते थे और उन्हें लगता था कि वे कभी भी अपने लक्ष्यों और सपनों को साकार नहीं कर पाएंगे। लेकिन वे इस पर अड़े रहे और हमारी दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए हम सभी उन्हें धन्यवाद दे सकते है।

आज मुझे एक लघु कहानी 'हाथी की रस्सी' याद आ रही है। जैसे ही एक आदमी हाथियों के पास से गुजर रहा था, वह अचानक रुक गया, इस तथ्य से भ्रमित होकर कि इन विशाल प्राणियों को केवल उनके अगले पैर से बंधी एक छोटी सी रस्सी द्वारा पकड़ा जा रहा था। कोई जंजीर नहीं, कोई पिंजरा नहीं। यह स्पष्ट था कि हाथी, किसी भी समय, अपने बंधनों को तोड़ सकते थे, लेकिन किसी कारण से, उन्होंने ऐसा नहीं किया।

उसने पास में एक प्रशिक्षक को देखा और पूछा कि ये जानवर वहीं क्यों खड़े रहे और भागने का कोई प्रयास क्यों नहीं किया। "ठीक है," ट्रेनर ने कहा, "जब वे बहुत छोटे होते हैं तो हम उन्हें बांधने के लिए एक ही आकार की रस्सी का उपयोग करते हैं और उस उम्र में, यह उन्हें पकड़ने के लिए पर्याप्त है। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि वे अलग नहीं हो सकते। उनका मानना है कि रस्सी अभी भी उन्हें पकड़ सकती है, इसलिए वे कभी भी आज़ाद होने की कोशिश नहीं करते।

वह आदमी चकित रह गया. ये जानवर किसी भी समय अपने बंधनों से मुक्त हो सकते थे, लेकिन क्योंकि उनका मानना था कि वे ऐसा नहीं कर सकते, वे वहीं फंस गए जहाँ वे थे।

हाथियों की तरह, हममें से कितने लोग जीवन भर इस विश्वास पर टिके रहते हैं कि हम कुछ नहीं कर सकते, सिर्फ इसलिए कि हम पहले एक बार इसमें असफल रहे?

असफलता सीखने का हिस्सा है; हमें जीवन में संघर्ष कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मैं एक वाक्य में अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा - 'यदि आप कड़ी मेहनत और अधिक प्रभावी ढंग से अध्ययन करते हैं, तो आप अपने आसपास की दुनिया में बदलाव लाएंगे।'